तेल पर नजर: तेल की कीमतें और भारत

(TH- Eye on oil: on oil prices and India)

चर्चा में क्यों?

- OPEC+ के द्वारा तेल के उत्पादन में कटौती को बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की गयी है, इसलिए भारत को भी पेट्रोल और डीजल की पंप कीमतों को वैश्विक तेल कीमतों के अनुरूप लाना चाहिए।

प्रमुख बिंदु

- OPEC+ को कच्चे तेल उत्पादकों का दुनिया का सबसे बड़ा समूह माना जाता है।
- 2024 तक जारी उत्पादन कटौती को बढ़ाने पर सहमति का उद्देश्य वैश्विक आर्थिक मंदी के बारे में चिंताओं के बीच तेल की कीमतों को गिरने से रोकना है।
- OPEC के प्रमुख उत्पादक सऊदी अरब ने भी स्वेच्छा से जुलाई में अतिरिक्त 1 मिलियन बैरल प्रति दिन (BPD) उत्पादन कम करने की बात कही।
- इससे पूर्व OPEC+ ने आश्चर्यजनक रूप से 1.66 मिलियन BPD की अतिरिक्त उत्पादन कटौती की घोषणा की थी।

OPEC + के बारे में

- संस्थापक सदस्यों- ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेज़ुएला द्वारा वर्ष 1960 में स्थापित, ओपेक/OPEC ने तब से काफी विस्तार किया है और अब इसमें 13 सदस्य देश हैं।
- ये सदस्य देश हैं- अल्जीरिया, अंगोला, कांगो, इक्वेटोरियल गिनी, गैबॉन, ईरान, इराक, कुवैत, लीबिया, नाइजीरिया, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात एवं वेनेज़ुएला।
- कतर ने 1 जनवरी, 2019 को इसकी सदस्यता छोड़ दी।
- अन्य 10 संबद्ध प्रमुख तेल उत्पादक देशों के साथ OPEC को OPEC+ के रूप में जाना जाता है।
- OPEC+ देशों में 13 ओपेक सदस्य देशों के साथ अज़रबैजान, बहरीन, ब्रुनेई, कज़ाखस्तान, मलेशिया, मैक्सिको, ओमान, रूस, दक्षिण सूडान और सूडान शामिल हैं।

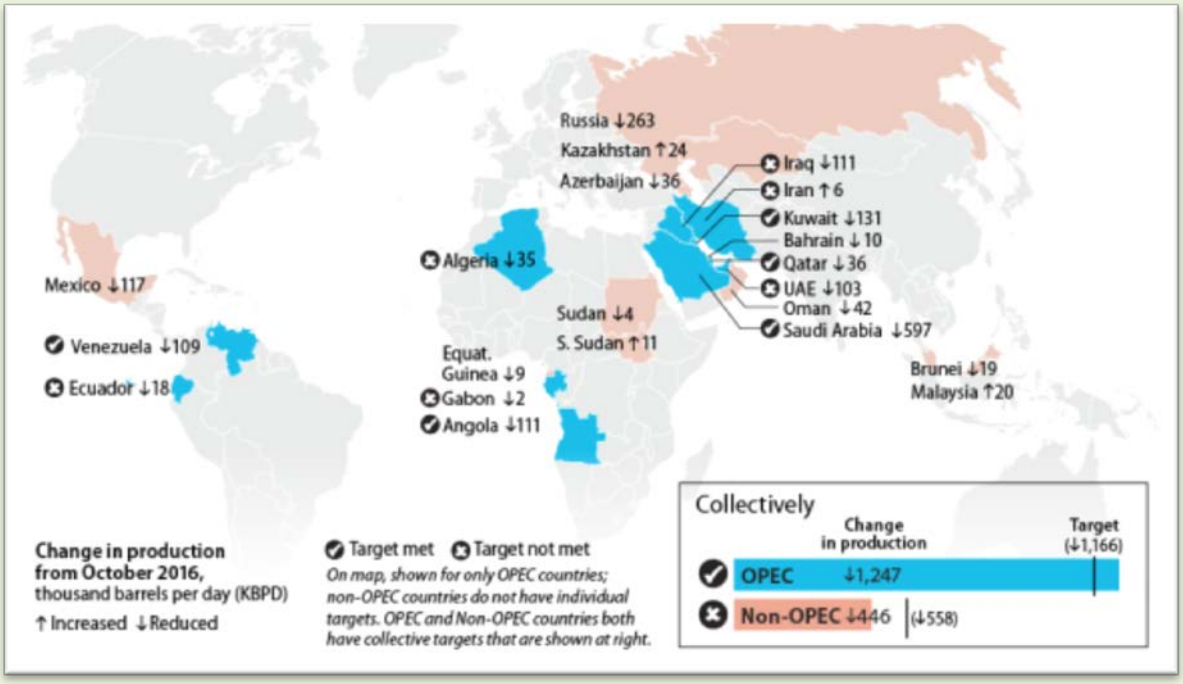

- इस संगठन का उद्देश्य अपने सदस्य देशों की पेट्रोलियम नीतियों का समन्वय और एकीकरण करना तथा उपभोक्ताओं को पेट्रोलियम की कुशल, आर्थिक व नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये तेल बाज़ारों का स्थिरीकरण सुनिश्चित करना है।
- पहले इसे पश्चिमी प्रभुत्व वाली बहुराष्ट्रीय तेल कंपनियों द्वारा नियंत्रित किया जाता था, जिन्हें "सेवन सिस्टर्स" के रूप में जाना जाता था, ओपेक ने वैश्विक पेट्रोलियम बाज़ार पर तेल उत्पादक देशों को अधिक तरजीह देने की माँग की।
- वर्ष 2018 के अनुमानों के अनुसार, वे दुनिया के कच्चे तेल का लगभग 40% और दुनिया के तेल भंडार का 80% हिस्सा रखते हैं।
- वे आमतौर पर यह निर्धारित करने के लिये हर महीने मिलते हैं कि सदस्य देश कितने तेल का उत्पादन करेंगे।
- हालाँकि कई लोगों का आरोप है कि ओपेक एक कार्टेल की तरह व्यवहार करता है, जो तेल की आपूर्ति का निर्धारण करता है और विश्व बाज़ार में इसकी कीमत को प्रभावित करता है।

भारत का रुख

- भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकताओं का 80% से अधिक आयात करता है।
- आपूर्ति कटौती की संयुक्त मंजूरी सऊदी-सह-ओपेक+ घोषणाएं भारत के लिए चिंता का कारण हैं क्योंकि इससे वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि होगी और भारतीय राजस्व कोष पर प्रभाव पड़ेगा।
- रूस पर आक्रमण के कारण लगी पश्चिमी रोक के पश्चात भी भारत ने रूस से कच्चे तेल की अपनी खरीद में तेजी से वृद्धि की है जिसके कारण तेल के एक आयातित बैरल के लिए भारत द्वारा भुगतान की जाने वाली कीमत में लगातार गिरावट आई है।

- परिणामस्वरूप भारत के कच्चे तेल की टोकरी की औसत मासिक कीमत जून, 2022 के अपने उच्चतम स्तर 116.01 डॉलर प्रति बैरल से 38% गिरकर 72.39 डॉलर हो गई थी। जबकि OPEC+ के नवीनतम कदम के परिणामस्वरूप वैश्विक तेल कीमतों में कुछ निकट भविष्य में तेजी की संभावना है।
- भारत ने रूसी कच्चे तेल के बढ़ते आयात के माध्यम से वैश्विक तौर पर लगे प्रतिबंधों से प्रभावित प्रतिकूल प्रभाव से खुद को काफी हद तक सुरक्षित रखा है।

भारत में प्रभाव

- फिर भी, कच्चे तेल की खरीद कीमतों में नरमी भारतीय उपभोक्ता तक नहीं पहुंची है।
- पेट्रोल और डीजल की पंप कीमतें 2022 से अपरिवर्तित बनी हुई हैं क्योंकि केंद्र और राज्य सरकारें और तेल विपणन कंपनियां किसी भी राजस्व को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, संभवतः लागत में किसी भी वृद्धि से खुद को सुरक्षित रखने हेतु ऊपरी स्तर पर ये मार्ग देखे जा रहे हैं।
- आयात बिल बढ़ने से न केवल मुद्रास्फीति बढ़ेगी और चालू खाता घाटा (CAD) एवं राजकोषीय घाटा बढ़ेगा, बल्कि डॉलर के मुकाबले रुपया कमज़ोर होगा तथा शेयर बाज़ार भी प्रभावित होगा।

आगे की राह

- उपभोग क्षमता में मुद्रास्फीति के क्षरण के परिणामस्वरूप निजी खपत खर्च के आंकड़ों में सख्ती की एक स्पष्ट कमी दिखाई दे रही है , नीति निर्माताओं को ईंधन की कीमतों पर अपने रुख का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए।
- जबकि तेल उत्पादों को GST के दायरे में लाने की माँग जल्द ही पूरी होने की संभावना को बढ़ाना चाहिए, विशेष रूप से राज्यों के लिए राजस्व निहितार्थ को देखते हुए, केंद्र नेतृत्व कर सकता है और अर्थव्यवस्था को राजकोषीय प्रोत्साहन प्रदान कर सकता है।